24

अपश्चात्तापी नगर

(11:20-24)

सुसमाचार के विवरणों में उस काम और सामर्थ के उन कामों का लेखा नहीं है जो यीशु ने खुराज़ीन, बैतसैदा और कफ़रनहूम में किए (देखें यूहन्ना 21:25)। इन नगरों को कीमती चीज़ दी गई थी पर उन्होंने इसे पूरी तरह से नकार दिया।

दो नगरों पर दो हाय (11:20-22)

[20]तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुत से सामर्थ के काम किए थे क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था। [21]''हाय खुराज़ीन: हाय बैतसैदा! जो सामर्थ के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़ कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते। [22]परन्तु मैं तुमसे कहता हूं, कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी।''

आयत 20. उनकी बात करते हुए जिन्होंने **मन फिराने** से इनकार कर दिया था, यीशु और भी स्पष्ट हो गया। उसने अपना ध्यान उन **नगरों** में अर्थात खुराजीन, बैतसैदा और कफरनहूम की ओर किया जहां उसने **बहुत से सामर्थ के काम** किए थे। ''सामर्थ के काम'' के लिए यूनानी शब्द (*dunamis*) वही है जिसका अनुवाद आम तौर पर ''सामर्थ'' किया जाता है। इन नगरों ने अपने बीच में परमेश्वर की बड़ी सामर्थ को देखा, परन्तु उसके साथ उनके सम्बन्ध में कोई बदलाव नहीं आया था। यीशु के सामर्थ के कामों से उसकी शिक्षा देने का ईश्वरीय अधिकार प्रमाणित हो गया था पर अभी भी वे इसे नकार रहे थे। उसके आश्चर्यकर्मों और शिक्षा से उनके मनों में मन फिराने की बात नहीं आई थी। इसलिए यीशु इन नगरों को **उलाहना देने लगा**।

आयत 21. हाय के लिए यूनानी शब्द (*ouai*) वह शब्द है, जिसका इस्तेमाल बड़े तरस या क्रोध के लिए किया जाता है। यहां पर इसका ज़ोर उस अफ़सोस पर है जो अपने संदेश के ठुकराए जाने पर मसीह को था। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''पाप को यीशु की डांट पवित्र क्रोध है, परन्तु क्रोध अति घमण्ड से नहीं बल्कि टूटे मन से आता है।''[1]

पहला नगर जिसे प्रभु ने उलाहना दिया **खुराजीन** था। इस नगर को कफ़रनहूम के निकट एक छोटा सा गांव होना माना जाता है। इसकी वास्तविक स्थिति ''टेल हूम (कफ़रनहूम) के लगभग तीन मील उत्तर की ओर गलील के तट से पहाड़ी के पीछे, खिरबेत केरेज़ नामक स्थान में'' थी।[2] सुसमाचार के विवरणों में खुराजीन में यीशु की सेवकाई का लेखा नहीं है। उस नगर में किसी विशेष आश्चर्यकर्म के किए जाने की बात नहीं है। बेशक सुसमाचार के विवरणों में यीशु के कामों का केवल नमूना ही है (यूहन्ना 20:30; 21:25)। मसीह की बात ही से यह संकेत

मिल गया कि निष्कपट मन के लोगों को विश्वास दिलाने के लिए काफी आश्चर्यकर्म हुए होंगे।

दूसरा नगर जिसे यीशु ने उलाहना दिया **बैतसैदा** था। यह यरदन के इसमें पड़ने के स्थान के पूर्व में, गलील की झील के उत्तरी तट पर मछुआरों का गांव था (मरकुस 6:45; 8:22; लूका 9:10)। यह पतरस, अन्द्रियास और फिलिप्पुस का गृहनगर था (यूहन्ना 1:44)। इस नगर से जुड़ा एकमात्र लिखित आश्चर्यकर्म मसीह का एक अन्धे को चंगाई देना था (मरकुस 8:22-26)। परन्तु चंगाई के अन्य आश्चर्यकर्म और पांच हज़ार लोगों को खिलाना इसके पास ही हुआ था (लूका 9:10-17)। बैतसैदा में और आश्चर्यकर्म किए गए होंगे, जो सुसमाचार के विवरणों में नहीं लिखे गए।

यीशु ने कहा कि **सामर्थ के काम** अर्थात आश्चर्यकर्म जो इन दो नगरों में किए गए, यदि **सूर और सैदा** में किए जाते तो लोग **कब के मन फिरा लेते।** सूर और सैदा बन्दरगाह नगर थे और उनके वासियों को व्यापारी और उपनिवेशक माना जाता था। वे प्राचीन फिनीके के लोगों की सन्तान थे। पुराने नियम में सूर और सैदा के लोग बाल देवता की पूजा करते थे और अपनी अनैतिकता और अशुद्धता के लिए प्रसिद्ध थे। इन दोनों ही नगरों को इनकी दुष्टता के कारण नबियों द्वारा दोषी ठहराया जाता था (यशायाह 23:1-18; यिर्मयाह 25:22; 47:4; यहेजकेल 26-28; आमोस 1:9, 10)।

यीशु सूर और सैदा के इलाके में से होकर गया और उसने वहां कम से कम एक आश्चर्यकर्म किया (15:21-28)। सूर नगर गलील की झील से लगभग पच्चीस मील और यरूशलेम से लगभग एक सौ मील दूर भूमध्य के तट पर था। पौलुस अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के बाद यरूशलेम को जाते हुए यहीं रुका था (प्रेरितों 21:3, 4)। सैदा तट थोड़ा आगे लगभग बीस मील तक था। रोम को जाने के समय पौलुस इस इलाके में भी रुका था (प्रेरितों 27:3)। यीशु ने मन फिराव की बात करते हुए इसे **टाट ओढ़ने और राख** के साथ जोड़ दिया। ''टाट'' जो ऊंट या बकरे के बालों से बुनी खुरदरी सामग्री होता था, बोरियों के लिए इस्तेमाल किया जाता था जिन्हें अनाज और अन्य चीज़ें डालकर एक से दूसरे स्थान में भेजा जाता था। निर्धन लोग इनका इस्तेमाल कपड़े बनाने के लिए करते थे। टाट पहनने के साथ ''राख'' का होना गहरे शोक या दुख का प्रतीक होता था (एस्तेर 4:1; यशायाह 58:5; दानिय्येल 9:3; योना 3:6)।

आयत 22. सूर और सैदा नगर चाहे बहुत बुरे थे पर यीशु ने कहा कि **न्याय के दिन** उनकी दशा खुराजीन और बैतसैदा से **अधिक सहने योग्य** होगी। क्यों? उसके कहने का अभिप्राय यह है कि यदि सूर और सैदा ने उन आश्चर्यकर्मों को देखा होता जो इन नगरों में किए गए थे तो उन्होंने मन फिरा लेना था। वास्तव में लूका का विवरण कलीसिया के आरम्भिक इतिहास में बाद में इन दोनों ही नगरों में चेले होने की बात बताता है (प्रेरितों 21:3-6; 27:3; 10:15 पर टिप्पणियां देखें)।

''ऊंचे किए गए'' एक नगर की भर्त्सना की गई (11:23, 24)

[23]''हे कफ़रनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा! जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता। [24]पर मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम की दशा अधिक सहने योग्य होगी।''

आयतें 23, 24. कफ़रनहूम गलील की झील के उत्तर पश्चिमी तट पर था। जैसा कि पहले कहा गया है, यह वह स्थान था, जो यीशु की अपनी सेवकाई के दौरान उसका घर होने की सबसे अधिक सम्भावना है (4:13 पर टिप्पणियां देखें; 8:5; 9:1)। कफ़रनहूम में प्रभु के काफ़ी आश्चर्यकर्म हुए (8:5-17; 9:1-8, 18-26; मरकुस 1:21-28; यूहन्ना 4:46-54)। मत्ती 8 और 9 में लिखे गए दस में से पांच आश्चर्यकर्म यहीं किए गए थे।

कफ़रनहूम समृद्ध, आत्मनिर्भर और संसार में अपनी स्थिति के साथ सुरक्षित था। इसके अपने अनुमान के अनुसार यह नगर **स्वर्ग तक ऊंचा** था। कफ़रनहूम को चाहे लगता था कि यह ऊंचा है, पर इसे **अधोलोक** तक नीचे लाया जाना था। यीशु ने बाबुल के घमण्डी राजा के विरुद्ध यशायाह के कटाक्ष की भाषा का इस्तेमाल किया होगा: ''तू मन में कहता तो था, 'मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से ऊंचा करूंगा; ...' परन्तु तू अधोलोक में उस गढहे की तह तक उतारा जाएगा'' (यशायाह 14:13-15)।

नये नियम में उपर्युक्त ''अधोलोक'' (हेडिस) पुराने नियम में इस्तेमाल किए गए ''शियोल'' जैसा ही है। इसका अर्थ ''कब्र,'' ''मृतकों का संसार'' और ''यातना'' हो सकता है। लियोन मौरिस ने बताया है, ''यहां पर *हेडिस* अर्थात नरक सबसे निचले सम्भावित स्थान के लिए है, बिल्कुल वैसे जैसे *स्वर्ग* सबसे ऊंचा सम्भावित स्थान है।''[3] ''स्वर्ग तक ऊंचा किया'' और ''अधोलोक तक नीचे जाएगा'' अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल पहली सदी में नगर के महत्व की तुलना उस विनाश से करने के लिए जो बाद में होने वाला था, प्रतीक के रूप में की गई है।[4]

जहां तक हम जानते हैं, कफ़रनहूम पर सकल अनैतिकता या शारीरिक सम्बन्धों के बिगाड़ का आरोप नहीं लगाया गया था। तौभी यीशु ने इसकी तुलना **सदोम** से की। पुराने नियम का यह नगर दुष्टता का पर्याय बन गया था (उत्पत्ति 19:24; व्यवस्थाविवरण 32:32; यशायाह 1:9, 10; यिर्मयाह 49:18; विलापगीत 4:6; यहेजकेल 16:48; मत्ती 10:15; 2 पतरस 2:6)। नगर में समलैंगिकता का पाप इतना व्यापक था कि ''सोडोमी'' और ''सोडोमाइट'' अर्थात समलैंगिक शब्दों का इस्तेमाल उस पाप और इसे करने वाले की पहचान के लिए किया जाता है।

कफ़रनहूम की स्थिति को सदोम की स्थिति से भी बुरा माना गया। यदि **सामर्थ के काम** जो कफ़रनहूम में किए गए थे **सदोम** में किए जाते तो वह नगर विनाश से बच जाता। इसी कारण यीशु ने कफ़रनहूम के लिए अपनी उस बात के अपने सार को बताया जो उसने खुराजीन और बैतसैदा के लिए कही थी: ''**न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम की दशा अधिक सहने योग्य होगी**'' (10:15 पर टिप्पणियां देखें; 11:22)।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

अपश्चात्तापी नगर (11:20-24)

संसार के कितने नगरों को मसीह के बारे में जानने और उसके पीछे चलने का बड़ा अवसर मिला होगा, जबकि अन्यों पर सच्चाई प्रगट ही नहीं हुई है? संसार के कितने स्थानों में लोगों को रेडियो और टेलीविज़न के माध्यम से सुसमाचार को सुनने का अवसर मिला है। अपनी स्थानीय भाषा में बाइबल तक उनकी पूरी पहुंच है। इससे भी बढ़कर, वे उनके बीच में विश्वासी मसीही लोग ही रहते होंगे जो प्रतिदिन उनके ऊपर मसीह की चमकती हुई ज्योति हैं। शायद उनको उनके समाज पर विपत्ति आने के बाद मसीही लोगों की उदारता के द्वारा आशीष मिलती है। परन्तु इन सब अवसरों के बावजूद उन्होंने मसीह को ठुकरा दिया। इसके विपरीत बहुत से लोग हैं जिन्होंने यीशु के बारे में नहीं सुना और उनकी पहुंच बाइबल तक नहीं है। उनके समाज में किसी मसीही के होने की बात न के बराबर है। बेशक उनका न्याय अधिक कठोरता से होगा, जिन्हें अधिक अवसर दिए गए हैं।

डेविड स्टिवर्ट

ईश्वरीय विरोधाभास (11:23)

कितनी ही बार मसीह का विरोध करने वाले लोग लगता है कि इस जीवन में सफल हैं! हो सकता है कि उनके पास ऊंचे पद वाली नौकरियां, बड़े बड़े बैंक बैलंस और विलासितापापूर्ण बड़े बड़े घर। सब सांसारिक संकेतों से लगता है कि उनके पास सब कुछ हैं। वे ''ऊंचे किए गए'' लगते हैं।

यीशु ने चेतावनी दी कि ऐसा ऊंचा किया जाना वास्तविकता के बजाय काल्पनिक है क्योंकि यह केवल थोड़ी देर का है। उसने उस नगर को उलाहना दिया जिसमें उसके अधिकतर लिखित आश्चर्यकर्म किए गए परन्तु फिर भी लोगों ने मन नहीं फिराया। उसने कहा, ''हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा'' (11:23)। उनकी शान मिट्टी में मिल जानी थी क्योंकि उन्होंने उद्धारकर्त्ता के पास नहीं लौटना था।

सुसमाचार के विवरणों में यीशु द्वारा इस ईश्वरीय विरोधाभास को कई बार दोहराया गया है: ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (23:12; देखें लूका 14:11; 18:14)।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 2, 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 13. [2]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 164. [3]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 290. [4]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 101.